पेन्टाटयूक

अध्याय 10

यूसुफ और उसके भाई

Manuscript

thirdmill
Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्धितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

प्रस्तावना....1
संरचना और सामग्री....2
कुलपिताओं के मध्य असामंजस्य (उत्पत्ति 37:2-36)....3
यूसुफ ने भाइयों को क्रोध दिलाया....3
भाइयों ने यूसुफ को बेच दिया....4
यूसुफ का भयपूर्ण शासन (उत्पत्ति 38:1–41:57)....4
कनान में यहूदा का पाप (उत्पत्ति 38:1-30)....4
मिस्र में यूसुफ की सफलता (उत्पत्ति 39:1–41:57)....5
मेल-मिलाप और पुनर्मिलन (उत्पत्ति 42:1–47:12)....6
पहली यात्रा (उत्पत्ति 42:1-38)....6
दूसरी यात्रा (उत्पत्ति 43:1–45:28)....7
तीसरी यात्रा (उत्पत्ति 46:1–47:12)....8
यूसुफ का उदार शासन (उत्पत्ति 47:13-27)....9
कुलपिताओं का सामंजस्य (उत्पत्ति 47:28–50:26)....9
याकूब की पारिवारिक व्यवस्थाएं (उत्पत्ति 47:28–50:14)....9
यूसुफ की पारिवारिक व्यवस्थाएं (उत्पत्ति 50:15-26)....10
प्रमुख विषय....11
सामान्य विशेषताएं....12
इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह....12
परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता....13
इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें....14
इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषें....14
विशिष्ट विशेषताएं....15
राष्ट्रीय एकता....15
राष्ट्रीय विविधता....18
उपसंहार....21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

पेन्टाटयूक

अध्याय दस

यूसुफ और उसके भाई

प्रस्तावना

जिन परिवारों में बड़ी और अधिक संपत्ति होती है, वहां भाई-बहनों के बीच अकसर इस बात को लेकर संघर्ष होता है कि किसे सबसे बड़ी विरासत मिलेगी। जब जायदाद को एक पीढ़ी से दूसरी तक पहुंचाने का समय आता है, तब जो भाई बहन एक समय में एक दूसरे से प्रेम करते है उनके बीच भी इतना मन मुटाव हो जाता है कि सिर्फ परमेश्वर ही उस प्रेम के बंधन को फिर से स्थापित कर सकता है। उत्पत्ति की पुस्तक हमें बताती है कि इस्राएल के कुलपिता, यूसुफ और उसके भाइयों के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ था। उनके पिता, याकूब, की संपत्ति को लेकर उनके रिश्ते कड़वे हो गए और दुश्मनी इतनी बढ़ गयी थी कि इसका हल निकालना असंभव जान पड़ता था। लेकिन जैसा कि हम इस पाठ में देखेंगे, परमेश्वर ने यूसुफ और उसके भाइयों का मिलाप करवाया और उनके आपसी प्रेम को फिर से स्थापित किया। परमेश्वर द्वारा किये गए इस समाधान ने पुराने नियम के दौरान इस्राएल के बारह गोत्रों के बीच संबंधों को मजबूती देने हेतु एक मार्ग तैयार किया था। और यह आज भी मसीह के अनुयायियों के बीच संबंधों का मार्गदर्शन करता है।

पेन्टाटयूक पर प्रस्तुत यह पाठ उत्पत्ति की पुस्तक के उस भाग पर आधारित है जो "यूसुफ और उसके भाइयों" के बारे में चर्चा करता है। उत्पत्ति 37:2–50:26 में हम, यूसूफ और उसके भाइयों के मध्य उत्पन्न हुए जटिल संबंध को थोड़ा विस्तार से देखेंगे।

इससे पहले कि हम अपने प्रमुख विषय पर जाएं, आइये उत्पत्ति की पुस्तक की मूलभूत विषयवस्तु की समीक्षा करें जिससे हमें मदद मिलेगी। अन्य पाठों में, हमने देखा कि उत्पत्ति तीन प्रमुख भागों में विभाजित होती है। प्रत्येक भाग को मूसा के मूल इस्राएली श्रोताओं को विशेष रूप से संबोधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। पहला भाग अति-प्राचीन इतिहास की चर्चा करता है, जो कि उत्पत्ति 1:1–11:9 में पाया जाता है। इस भाग में, मूसा ने इस्राएलियों को यह समझाने का प्रयास किया कि परमेश्वर ने संसार के इतिहास के प्रारंभिक दौर में जो कार्य किया था उसी में उसने कनान देश के लिए इस्राएल की बुलाहट को स्थापित कर दिया था। दूसरा भाग उत्पत्ति 11:10 – 37:1 में प्रारंभिक कुलपिताओं के इतिहास के बारे में है। यहाँ पर, मूसा ने बताया कि अब्राहम, इसहाक और याकूब के जीवन किस तरह उन मुद्दों पर आधारित हैं जिनका सामना इस्राएली लोग प्रतिज्ञा किए हुए देश की अपनी यात्रा के दौरान कर रहे थे। और तीसरा भाग, उत्पत्ति 37:2–50:26 में, भविष्य में आने वाले कुलपिताओं का इतिहास, यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी का वर्णन करता है। हमारा यह पाठ अपना पूरा ध्यान उत्पत्ति के अंतिम भाग पर केंद्रित करेगा।

जैसा कि हम देखेंगे, उत्पत्ति के इस भाग को लिखने के पीछे मूसा के उद्देश्यों के भीतर उसके मूल श्रोताओं के लिए बहुत सी शिक्षा की बातें भी शामिल थीं। लेकिन सामान्य रूप में:

> यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी का उद्देश्य इस्राएल के सभी गोत्रों को यह सीखाना था कि जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय पाने और उसमें बसने के लिए बढ़ते है तो उन्हें कैसे एक साथ सामंजस्य और प्रेम से रहना है।

यूसुफ और उसके भाइयों पर हमारा पाठ दो प्रमुख भागों में विभाजित होगा। पहले, हम इन अध्यायों की संरचना और सामग्री की जांच करेंगे, और यह भी देखेंगे की उनकी साहित्यिक रूपरेखा और विषय वस्तु कैसे साथ-साथ चलती है। दूसरा, हम उन कई प्रमुख विषयों को देखेंगे जिन पर मूसा ने

इस्राएल के गोत्रों को ध्यान में रखते हुए,जोर दिया, और कैसे ये विषय आधुनिक मसीहों के जीवन में लागू होते हैं। आइए उत्पत्ति के इस भाग की संरचना और सामग्री को देखने के द्वारा शुरू करते हैं।

संरचना और सामग्री

हर एक जन जो यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी से परिचित है, यह जानता है कि इसमें कई पात्र, विविध सांस्कृतिक परिवेश और कई जटिल एवं छोटे-छोटे षडयंत्र शामिल हैं। ये विशेषताएं इतनी जटिल हैं कि दिए गए विवरणों में खोकर उस व्यापक साहित्यिक संरचना से, जो इसे एक साथ बांध कर रखती है, दृष्टि हटा देना ज्यादा आसान हो जाता है। लेकिन इन अध्यायों की संरचना और सामग्री एक साथ कैसे कार्य करती हैं इस पर ध्यान देना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी अत्यधिक संगठित नाटक है।

उत्पत्ति 37:2–50:26 में मूसा की प्रस्तुति एक अत्यधिक संघटित पाँच-चरण वाले नाटक का निर्माण करती है :

- उत्पत्ति 37:2-36 में, कहानी की प्रारंभिक समस्या, यूसुफ के शासन की संभावना पर कुलपिताओं के विरोध को दर्शाती है।
- 38:1–41:57 में, दूसरा चरण, या बढ़ती कार्यवाही, मिस्र में सत्ता पर यूसुफ के उपर बढ़ने — यूसुफ के भयपूर्ण वाले शासन पर ध्यान केंद्रित करता है।
- 42:1–47:12 में तीसरा चरण, नाटक का महत्वपूर्ण बिन्दु है। यह मिस्र में कुलपिताओं के मेल-मिलाप को दर्शाता है।
- 47:13-27 में, चौथा चरण, या घटती कार्यवाही, मिस्र में यूसुफ के कृपालु शासन की रिपोर्ट देता है।
- और 47:28–50:26 में, नाटक का अंतिम परिणाम, यूसुफ के शासन के आधीनता में कुलपिताओं के मध्य सामंजस्य स्थापित हो जाने का वर्णन करता है।

हाल के दशकों में, कई टीकाकारों ने दिखाने की कोशिश की है कि उत्पत्ति में ये अध्याय एक विस्तृत संकेंद्रित व्यत्यासिका का निर्माण करते हैं। एक व्यत्यासिका का अर्थ है:

> एक साहित्यिक संरचना जिसमें बीच के भाग से पहले का भाग और उसके बाद का भाग एक दूसरे के समानांतर होते हैं या एक दूसरे को संतुलित करते हैं।

इस तरह की ज्यादातर कोशिशें इस दृष्टिकोण को कुछ ज्यादा ही दूर तक खींचते हैं। लेकिन वे बड़े पैमाने पर नाटकीय समरूपता की ओर इशारा करते हैं जो यूसुफ और उसके भाइयों के पूरे अभिलेख के लिए सामंजस्य को स्थापित करते हैं।

सामान्य रूप में, यह देखना मुश्किल नहीं है, कि कुलपिताओं की कहानी असामंजस्य के साथ शुरु होती है, और नाटक का अंत उनके बीच सामंजस्य स्थापित किये जाने के साथ होता है।

मिस्र में यूसुफ का बढ़ता हुआ और भयपूर्ण शासन और बाद में आने वाले उसके दयापूर्ण शासन के अभियान के साथ एक संतुलन बनाता है। और वह नया मोड़, या काज — असामंजस्य और डर से शुरू करते हुए दया और सामंजस्य तक आने वाला परिवर्तन ही — वह सुलह-शांति और पुनर्मिलन है जो मिस्र में घटित होता है। हम इन घटनाओं को उस क्रम में देखेंगे जिसमें मूसा ने इन्हें प्रस्तुत किया था। लेकिन

जब हम यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में कई विवरणों की जांच करते हैं तब इस मूल नाटकीय समरूपता की समझ रखने से हमें मदद मिलेगी ।

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी उत्पत्ति के किसी भी दूसरे भाग से ज्यादा साहित्यिक जटिलताओं को दिखाती है। इसमें पात्रों की एक लम्बी नामावली है और उनमें से कई को त्रि-आयामी, बदलते पात्रों के रूप में चित्रित किया गया है। दृश्यों को विशद रूप से दर्शाया गया है। विडंबना, हास्य और त्रासदी पूरे अध्याय में दिखाई देती हैं। कहानी में घटनाओं के कई अप्रत्याशित मोड़ शामिल हैं जो अन्य घटनाओं का स्मरण कराते और पूर्वानुमान लगाते हैं। वैसे तो, उत्पत्ति के इस हिस्से ने मूल इस्राएली श्रोताओं से इससे कहीं अधिक विचार करने की आशा की होगी जितना कि हम इस पाठ में शायद ही पता कर सके। इसलिए, समय सीमा को देखते हुए, हम प्रत्येक अध्याय की सामग्री पर केवल कुछ ही टिप्पणियों तक अपने आप को सीमित करेंगे।

कुलपिताओं के मध्य असामंजस्य (उत्पत्ति 37:2-36)

उत्पत्ति 37:2-36 में मूसा ने अपनी कहानी को भविष्य में स्थापित होने वाले यूसुफ़ के शासन काल पर कुलपिताओं की तरफ से उठ रहे आरंभिक नाटकीय समस्या के साथ शुरु किया। इस शुरुआती अध्याय में दो भाग शामिल हैं जो एक साथ यह दिखाते हैं कि समय के साथ किस तरह से यूसुफ के परिवार में असामंजस्य बढ़ता और खराब रूप लेता जा रहा था। पहला भाग, 37:2-11 में, दिखाता है कि किस तरह से यूसुफ ने अपने भाइयों को क्रोध दिलाया था। और दूसरा भाग, 12-36 पदों में बताता है कि कैसे भाइयों ने यूसुफ को गुलामी में बेच डाला था। आइए देखते है कि किस ढंग से यूसुफ द्वारा अपने भाइयों को क्रोध दिलाया गया।

यूसुफ ने भाइयों को क्रोध दिलाया

मूसा ने पहले यूसुफ को एक भोले-भाले युवक के रूप में चित्रित किया जो अपने पिता का चहेता था। उदाहरण के लिए, पद 3 में, याकूब ने यूसुफ को एक रंग बिरंगा अंगरखा दिया जिसने उसके भाइयों को ईर्ष्या के लिए प्रेरित किया। पद 4 हमें बताता है "वे उससे बैर करने लगे और उसके साथ ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे।" फिर, दो अतिरिक्त विवरणों हम देखते है जिससे मामला और भी बदतर हो जाता है, यूसुफ़ अपने स्वप्न बताने के द्वारा भविष्य में परिवार के ऊपर अपनी महिमा की डींग मारता है । इस कारण से, पद 5 और पद 8 में, मूसा ने लिखा कि यूसुफ के भाई "उससे और भी द्वेष करने लगे।" और पद 11 में हम पढ़ते है, "उसके भाई तो उससे ईर्ष्या करते थे।"

> यूसुफ और उसके भाइयों के बीच असामंजस्य के दो कारण मैं बता सकता हूँ। पहला है कि उसके पिता ने उसके लिए सबसे सुंदर अंगरखा बनवाया, और वह अंगरखा, अन्य भाइयों ने देखा और कहा, "हे ईश्वर, मुझे लगता है कि मुझे उसकी जरूरत है। यह मेरा होना चाहिए।" और जब हम स्वयं को देखते हैं, तो पाते है कि इस समाज में भी कई तरह के असामंजस्य हैं, क्योंकि कुछ लोग बेहतर जीवन जी रहे हैं और हम देखते है कि दूसरे लोग स्वयं से यह पूछते हैं कि, "मैं इस दूसरे व्यक्ति के समान क्यों नहीं हूँ?" यहाँ तक कि इस तरह की सोच हम कलीसियाओं में भी पाते हैं। हम कुछ लोगों की ओर देखते हैं जो बीमार हैं और दूसरे स्वस्थ और फिर हम खुद से पूछते हैं, "हम स्वस्थ क्यों नहीं हैं?" इसलिए, यूसुफ को सबसे अच्छी वस्तु देना जबकि वह इन दूसरों के पास नहीं है, कुछ असामंजस्य को पैदा करता है। दूसराः मनुष्य का पापमय स्वभाव, अन्य भाई ईर्ष्यालु थे, और आपको पता, क्योंकि उनके छोटे भाई के पास उनसे बेहतर, अंगरखा था, जो

> उनके अंगरखे से ज्यादा सुंदर था, वे ईर्ष्या करने लगे। ईर्ष्या का बीज हम सब में पाया जाता हैं। यह केवल उन भाइयों में ही नहीं था, लेकिन यह हम सब में भी है। परन्तु एक मसीही होने के नाते हमें पहले इसको पहचानने और जानने को कहा गया है कि यह डाह का पाप है और हम इसको रोक सकते हैं।
>
> — रेव्ह. डा. सीप्रियन के. गुचिएन्डा

यूसुफ़ द्वारा भाइयों को क्रोध दिलाने द्वारा कुलपिताओं के बीच जो असामंजस्य पैदा हुआ उसे दर्शाने के बाद, मूसा 37:12-36 के दूसरे भाग की ओर बढ़ता है। इन पदों में एक छोटी कहानी पायी जाती है जो बताती है कि भाइयों ने यूसुफ को गुलामी में कैसे बेचा था।

भाइयों ने यूसुफ को बेच दिया

यहाँ हम देखते हैं कि भाइयों ने यूसुफ को पकड़ा, उसके रंगबिरंगे अंगरखे को उस पर से उतारा, और उसे जान से मारने की योजना बनाई। सबसे बड़े भाई, रूबेन ने, यूसुफ को छुड़ा कर मदद करने की व्यर्थ कोशिश की। लेकिन अंत में, यह यहूदा था जिसने दूसरों को आश्वस्त किया कि वे यूसुफ को मारने के बजाय गुलामी में बेच दें। भाइयों द्वारा याकूब को एक दुखद और झूठी रिपोर्ट देने के साथ इस प्रकरण का अंत होता है कि यूसुफ को किसी जंगली जानवर द्वारा खा लिया गया था। भाइयों ने याकूब को यूसुफ के खून से सना हुआ अंगरखा दिखाया, और याकूब बहुत ही दुःख और शोक में डूब गया।

एक साथ, ये दोनों प्रकरण उस नाटकीय समस्या का परिचय देते हैं जो यूसुफ और उसके भाइयों की पूरी कहानी के क्रम को निर्धारित करते हैं। इस्राएल के गोत्रों के कुलपिताओं के बीच दुखद असामंजस्य की शुरुआत यहीं से होती है।

यूसुफ के भविष्य में प्रकट होने वाले शासन और कुलपिताओं के मध्य पनपे असामंजस्य की समस्या के साथ आरंभ करने के बाद, मूसा दूसरे चरण की तरफ बढ़ता है। 38:1–41:57 में, मूसा ने यूसुफ के भयपूर्ण शासन के उदय के बारे में बताया है।

यूसुफ का भयपूर्ण शासन (उत्पत्ति 38:1–41:57)

इस चरण में, अपने श्रोताओं को अंतर्दृष्टि देने के द्वारा जो कहानी में पात्रों के पास नहीं था, मूसा ने नाटकीय विडंबना का उपयोग किया था। सबसे पहले, यूसुफ के भाई — जिनका प्रतिनिधित्व यहाँ पर यहूदा द्वारा किया गया—कनान देश में रहते थे, वे स्पष्ट रूप से आश्वस्त थे कि उन्होंने यूसुफ को अपने ऊपर श्रेष्ठ साबित होने से रोक दिया था। लेकिन, दूसरे पात्र इस बात से अंजान थे कि, यूसुफ का शासन दूर मिस्र में बढ़ रहा था। परमेश्वर ने यूसुफ की गुलामी को उसके परिवार के ऊपर उसे ऊँचा उठाने के रूप में बदल दिया था।

यूसुफ के भयपूर्ण शासन के केंद्र को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है। सबसे पहले स्थान पर, 38:1-30 जो कनान में, तमार के ख़िलाफ़ किये गए यहूदा के पाप का विवरण देता है। फिर, 39:1–41:57 में, हम मिस्र में यूसुफ की सफलता के बारे में पढ़ते हैं। आइए कनान में यहूदा के पाप को देखते हैं।

कनान में यहूदा का पाप (उत्पत्ति 38:1-30)

इस अध्याय में यहूदा मुख्य किरदार के रूप में दिखता है क्योंकि यह यहूदा ही था जिसने रूबेन के बजाय, स्वयं अपने भाइयों को पहले प्रकरण में यूसुफ को जान से मारने से रोका था। इसलिए, यह भाग याकूब के इस बेटे के कार्यों को प्रदर्शित करता है, जिसकी अपने भाइयों में सबसे अधिक प्रतिष्ठा थी।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

यहूदा के पाप का प्रकरण 38:1-5 में यहूदा के बेटों के जन्म की रिपोर्ट देने के साथ आरंभ होता है। पद 2 में नैतिक चरित्र को दिखाया गया है जब हम पढ़ते हैं कि यहूदा ने कनानी स्त्री से विवाह किया।

6-11 पदों में हम यहूदा के बेटों और तामार की कहानी को पाते हैं। पहले, यहूदा ने अपने सबसे बड़े बेटे, एर से तामार का विवाह किया। जब एर मर जाता है, तो यहूदा ने अपने दूसरे पुत्र से तामार का विवाह किया। निर्वासित विवाह, या एक निःसंतान विधवा के देवर के साथ किये जाने की विवाह की प्रथा को व्यवस्थाविवरण 25: 5-10 में अनुमति दी गई थी। इस प्रथा का उद्देश्य उस भाई के लिए एक वारिस पैदा करना था जो मर गया हो, और इसके द्वारा एक विधवा की रक्षा भी की जाती थी। लेकिन पद 9 में, ओनान ने तामार को संतान देने से मना कर दिया। इसलिए, पद 10 में, परमेश्वर ने ओनान को भी मार डाला। यहूदा को डर था कि उसका तीसरा बेटा, छोटा शेला, का भाग्य भी कही यही न हो। इसलिए, उसने उसका विवाह तामार से करने से मना कर दिया। इसके बजाय, उसने तामार को वापस उसके पिता के पास शर्मिंदगी में भेज दिया।

12-26 पदों में हम तामार द्वारा यहूदा को प्रलोभन दिए जाने की कहानी को पढ़ते हैं। जब तामार ने महसूस किया कि शेला के साथ उसका विवाह नहीं होने जा रहा था, तो उसने स्वयं एक वेश्या का रूप धारण किया और यहूदा को बहकाया। उसकी मुहर, और उसका बाज़ूबन्द, और छड़ी ऱखने के द्वारा जिन्हें यहूदा ने भुगतान के बदले में दिया था उसने बड़ी चालाकी से यहूदा को बेवकूफ बनाया। तीन महीने बाद, 24-26 पदों में, यहूदा ने सुना कि तामार गर्भवती थी और उसने गुस्से में उसे मारने का आदेश दिया। लेकिन तामार ने मुहर, बाज़ूबन्द और छड़ी जो यहूदा ने उसे दिए थे सबके सामने प्रस्तुत किए। और जब यहूदा को एहसास हुआ कि उसने क्या किया था, तो वह अपने दोष को मान लेता है। उत्पत्ति 38:26 को सुनिए जहाँ यहूदा ने कहा:

> वह तो मुझ से कम दोषी है, क्योंकि मैं ने उसका अपने पुत्र शेला से विवाह न किया (उत्पत्ति 38:26)।

जैसा कि यह पद इंगित करता है, कुलपिता यहूदा ने स्वीकार किया कि उसका पाप तामार द्वारा किए गए किसी भी कार्य से ज्यादा बुरा था। और वह अपने विनम्र स्वीकारोक्ति एवं पश्चाताप में अनुकरणीय था। इस मन परिवर्तन के परिणामस्वरूप, तामार के ख़िलाफ़ यहूदा के पाप की कहानी का सकारात्मक अंत होता है। कनानी स्त्री के द्वारा पैदा हुए यहूदा के पुत्रों के वृत्तांत के साथ शुरुआत किये भाग के विपरीत जाते हुए मूसा ने पद 27-30 में, तामार से जन्मे यहूदा के पुत्रों की कहानी के साथ इस भाग को समाप्त किया। पेरेस और ज़ेराह दोनों ही यहूदा के गोत्र में प्रमुख नाम बन गए।

कनान में यहूदा के पाप की घटनाओं को ध्यान में रखते हुए, यूसुफ के भयपूर्ण शासन के साथ जुड़े दूसरे भाग की ओर बढ़ते हैं। उत्पत्ति 39:1–41:57 में, पाया जाने वाला यह भाग, मिस्र में यूसुफ की सफलता का एक लंबा लेख है।

मिस्र में यूसुफ की सफलता (उत्पत्ति 39:1–41:57)

यह भाग तीन प्रमुख भागों में विभाजित होता है। पहला भाग 39:1-23 में पोतीपर के घर से यूसुफ़ के जेल जाने तक का वर्णन करता है। यूसुफ के मिस्र आने के बाद, उसे जल्द ही पोतीपर से कृपा प्राप्त होती है और वह उसके घराने का प्रबंध करने वाला बन जाता है। लेकिन पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को बहकाने का प्रयास किया। जब वह विफल हो जाती है, तो उसने यूसुफ पर दुराचार का आरोप लगाया। हालाँकि, यूसुफ ने उसकी कोशिशों का विरोध किया, लेकिन पोतीपर ने अपनी पत्नी के झूठे आरोपों पर विश्वास किया। उसने यूसुफ को फिरौन की जेल में डाल दिया, जहाँ यूसुफ ने जल्द ही जेलर का विश्वास जीत लिया। क्योंकि यह प्रकरण तामार के साथ यहूदा के पाप की कहानी के बाद आता है, इसलिए यह

स्पष्ट है कि यह कहानी यूसुफ की नैतिक शुद्धता और यहूदा की अनैतिकता के मध्य विरोधाभास को दिखाता है।

> जब मैं यहूदा और तामार की कहानी को पढ़ता हूँ, तो ऐसा लगता है कि मुझे थोड़ा सा काट छांट का काम करना चाहिए, इस कहानी को उठा कर कहीं और रखना चाहिए। और फिर भी, जब आप वास्तव में संदर्भ को पढ़ते हैं, तो आपको ठीक से समझ आता है कि परमेश्वर ने यूसुफ की कहानी को शुरू करने बाद उस कहानी को क्यों रखा होगा। मुझे लगता है कि उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह अधर्मी व्यक्ति और धर्मी व्यक्ति के बीच अंतर को दिखाना चाहता है। यूसुफ पोतीपर की पत्नी के यौन प्रलोभन का विरोध करने के लिए तैयार है। यहूदा वास्तव में स्वेच्छा से वेश्यावृति में संलग्न है, शायद धार्मिक मंदिरों वाली वेश्यावृति भी। और इसलिए आप उस अंतर को देखते हैं, और तथ्य यह है कि परमेश्वर यूसुफ को पहिलौठे की दोगुनी आशीषों से आशीषित करने जा रहा है, भले ही वह पहिलौठा नही है, लेकिन वही वह व्यक्ति है जो धर्म के मार्ग पर अपने परिवार की अगुवाई करता है।
>
> डॉ. स्टीफन जे. ब्रेमर

दूसरा, 40:1–41:45 में, यूसुफ जेल से फिरौन के दरबार में पहुँचता है। इस भाग में, मूसा ने बताया कि कैसे यूसुफ़ फिरौन के अधिकारियों के सपनों की व्याख्या करके सत्ता के शिखर तक पहुँचता है। फिर बाद में, उसने सात वर्ष की बहुतायत और सात वर्ष के अकाल के संबंध में फिरौन के स्वप्नों की भी व्याख्या की।

तीसरे भाग, 41:46-57 में, मूसा ने फिरौन के दरबार में यूसुफ के शासन को सारांशित किया। इस भाग में, मूसा ने बताया कि किन किन तरीकों से यूसुफ ने फिरौन के बाद मिस्र के प्रधानमन्त्री के रूप में अपने अधिकारो का प्रयोग किया। यूसुफ की सफलता के प्रत्येक भाग में, मूसा ने स्पष्ट किया कि यूसुफ अपने कौशल से नहीं, बल्कि परमेश्वर के हाथों के द्वारा सत्ता के शिखर तक पहुँचा।

अब जबकि हमने यूसुफ के भविष्य में आने वाले शासन और कुलपिताओं के मध्य पैदा हुए असामंजस्य का, और मिस्र में यूसुफ के भयपूर्ण शासन की जाँच कर ली है, तो अब हमें कहानी के केंद्र बिन्दु की ओर बढ़ना चाहिए: मिस्र में कुलपिताओं का मेल-मिलाप और पुनर्मिलन, जो कि उत्पत्ति 42:1–47:12 में वर्णित है।

मेल-मिलाप और पुनर्मिलन (उत्पत्ति 42:1–47:12)

मेल-मिलाप और पुनर्मिलन की इस केंद्रिय कहानी में यूसुफ के परिवार द्वारा कनान से मिस्र तक की गई तीन नज़दीकी से जुड़ी यात्राएँ शामिल हैं। पहली यात्रा उत्पत्ति 42:1-38 में है। दूसरी यात्रा 43:1–45:28 में पाई जाती है। और तीसरी को 46:1–47:12 में देख सकते हैं। आइए पहली यात्रा पर गौर करते हैं।

पहली यात्रा (उत्पत्ति 42:1-38)

पहली यात्रा तीनों विवरणों में सबसे सरल है और यह तीन भागों में विभाजित की जा सकती है। सबसे पहले, 42:1-5 में, भाइयों ने भयानक अकाल के कारण कनान से मिस्र की यात्रा की। इस भाग में, याकूब ने बिन्यामिन को छोड़कर, यूसुफ के सभी भाइयों को मिस्र में भोजन ख़रीदने के लिए भेजा।

दूसरा भाग, 42:6-28 में, मिस्र में उन घटनाओं की चर्चा करता है जब यूसुफ ने सबसे पहले अपने भाइयों को पहचाना। यूसुफ ने अपनी पहचान को उजागर नहीं किया, लेकिन बिन्यामिन को लाने के लिए उन्हें कनान वापस भेजने के द्वारा अपने भाइयों के चरित्र को परखा। सबसे पहले तो, यूसुफ ने एक को छोड़कर सभी को बंदी बना लेने की धमकी दी जब तक कि बिन्यामिन मिस्र नहीं आता। परिणामस्वरूप, भाइयों को एहसास होने लगा कि उनके हिसाब का समय आ गया था। 42:21 में, वे एक दूसरे से कहते हैं: "निःसन्देह हम अपने भाई के विषय में दोषी हैं।" तीन दिन बाद, यूसुफ ने शिमौन को छोड़ बाकी सब को बिन्यामिन को लाने के लिए भेज दिया। उसने आदेश दिया कि उनके बोरे अनाज से और जो चांदी वे अनाज खरीदने के लिए लाए थे उनसे भर दिए जाएं। जब भाइयों ने वापसी यात्रा की, तो उनमें से एक ने अपने बोरे में चांदी पाया। भाई भयभीत थे और 28वें पद में चिल्लाते हैं, "यह क्या है जो परमेश्वर ने हमारे साथ किया है?"

तीसरा भाग, 29-38 पदों में, बताता है कि भाइयों के कनान लौटने पर क्या हुआ। उन्होंने बिन्यामिन को अपने साथ मिस्र ले जाने के लिए अपने पिता को मनाने की कोशिश की, लेकिन याकूब ने मना कर दिया। इस कारण, भाई कनान में ठहरे रहे।

दूसरी यात्रा (उत्पत्ति 43:1–45:28)

पहली यात्रा को संक्षेप में देख लेने के बाद, आइए उत्पत्ति 43:1–45:28 में दूसरी यात्रा की घटनाओं की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं। दूसरी यात्रा, पहली यात्रा से ज्यादा जटिल है , और यह भी तीन प्रमुख भागों में विभाजित होती है। 43:1-14 में, पहला भाग, भाइयों की मिस्र की यात्रा से पहले का है। उनके भोजन की आपूर्ति समाप्त होने के बाद, आखिरकार याकूब बिन्यामिन को अपने भाइयों के साथ मिस्र भेजने के लिए तैयार हो जाता है।

दूसरे भाग, 43:15–45:24 में, मिस्र में होने वाली घटनाओं का लंबा चित्रण है। पहले, 43:15-34 में, यूसुफ ने अपने भाइयों का अपने घर पर एक बड़ी दावत में स्वागत किया। लेकिन, वह अपनी पहचान को गुप्त रखना जारी रखता है। 43:30 के अनुसार, यूसुफ बिन्यामिन को देखकर इतना भावूक हो गया कि वह एकांत में रोने के लिए कमरे से बाहर आ जाता है।

44:1-13 में, यूसुफ अपने भाइयों को और परखता है। उसने अपने घर के अधिकारी को उनके बोरों में अनाज भरने और चांदी रखने और बिन्यामिन के बोरे में चांदी का कटोरा रखने का आदेश दिया। फिर यूसुफ ने अपने भाइयों को वापस कनान भेज दिया। लेकिन यूसुफ के कहने पर, घर के अधिकारी ने भाइयों को जा पकड़ा। उसने चांदी के कटोरे को बिन्यामिन के बोरे में "पाया", और भाइयों को वापस यूसुफ के घर ले आया।

14-34 पदों में, यहूदा, यूसुफ से दया की भीख मांगने लगता है और पद 16 में स्वीकार करता है कि: "परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म पकड़ लिया है।" तब यहूदा ने बिन्यामिन के स्थान पर खुद को मिस्र में रुकने की निस्स्वार्थ पेशकश की। यूसुफ यहूदा के विनम्र निवेदन से भावुक हो जाता है। और 45:1-15 में, यूसुफ अंततः अपनी पहचान को अपने भाइयों पर प्रकट करता है। अध्याय 45:2 हमें बताता है, "[यूसुफ] चिल्लाकर चिल्लाकर रोने लगा और मिस्रियों ने सुना, और फिरौन के घर के लोगों को भी इसका समाचार मिला।" पद 7 में यूसुफ समझाता है कि परमेश्वर ने उसे मिस्र भेजा था "कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े।" फिर वह अपने भाइयों से कहते है कि वे उनके पिता, याकूब को मिस्र लेकर आयें। यह दृश्य यूसुफ और बिन्यामिन के रोने के मार्मिक दृश्य के साथ पद 14-15 में समाप्त होता है जब वे एक दूसरे को गले लगाते हैं और यूसुफ अपने सभी भाइयों का चुंबन लेता और उनके साथ बातचीत करता है।

> यूसुफ की कहानी का मध्य भाग यूसुफ और उसके भाइयों के बीच मेल-मिलाप के बारे में है। वह पहले ही मिस्र चला गया है, संघर्ष आते हैं, यूसुफ के भाई अकाल

> से बचने के लिए भोजन और राहत खोजते हुए आते हैं, लेकिन उसके बीच में, विशेषकर अध्याय 45 में, हमारे पास यह शानदार तस्वीर है — यह शानदार है, वास्तव में — उत्पत्ति की पूरी पुस्तक के सबसे नाटकीय, और भावनात्मक भागों में से एक है, और वह तब होता है जब यूसुफ और उसके भाई अंततः आपस में सामंजस्य स्थापित करते हैं। और आप पाते हैं कि वे एक दूसरे के गले मिल रहे हैं और रो रहे हैं और रो रहे हैं और रोते ही जा रहे हैं। वे उस अध्याय और उससे थोड़े पहले वाले अध्याय में इतना रोते हैं, कि मिस्री लोग भी अचम्भा करते हैं कि इतना रोना-धोना क्यों चल रहा है। और इस तरह, यह एक खुबसूरत तस्वीर है क्योंकि भाइयों के बीच इतने सालों से असामंजस्य की स्थिति बनी हुई थी, लेकिन उस क्षण वे पूरी तरह से एक हैं। और वह एकता इन तथ्य से आती है, सबसे पहले, कि यूसुफ ने अपने भाइयों को परखा था और पाया कि वे बदल चुके थे। वे ऐसे लोग नहीं थे जैसे कि वे शुरू में थे जब उन्होंने उसके जीवन को खत्म करने की कोशिश की थी, जब उन्होंने अपने पिता को धोखा दिया और कई बुरे काम किए थे। पर अब वे बदले हुए लोग थे, और उनमें से कुछ, जैसे यहूदा, विशेष रूप से बदले हुए लोगों के रूप में उभर के आया था...सामंजस्य इस तथ्य से आता है कि भाइयों में बहुत परिवर्तन आया है और यूसुफ भी बदल गया है। वह ऐसे तेज तर्रार युवक से जो अपने सपनों और अपने जीवन के विषय में बहुत गर्व करता था अब ऐसे व्यक्ति में बदल गया है जो सत्ता और ऊँचे पद से दया करता है। और जब आप उन बदलावों को इन अध्यायों में होता देखते हैं, या उन अध्यायों में उसकी पहचान करते हैं, तो उनके रोने और एक दूसरे के गले मिलना का दृश्य बहुत अनमोल है और मूसा के दिनों में स्पष्ट रूप से इस्राएलियों के मनों में यह बस गया होगा।
>
> डॉ. रिचर्ड एल. प्रैट, जूनियर

फिर, 45:16-24 में, याकूब को लाने हेतु अपने भाइयों को भेजने के लिए फिरौन ने यूसुफ को निर्देश दिया। और पद 20 में फिरौन यूसुफ से प्रतिज्ञा करता है: "मिस्र में जो कुछ अच्छे से अच्छा है सो तुम्हारा है।" यूसुफ मान जाता है और अपने भाइयों को उनके इस नए सद्भाव और प्रेम में बने रहने के लिए निर्देश देता है। पद 24 में यूसुफ ने उन्हें निर्देश दिया, "मार्ग में कहीं झगड़ा न करना!"

दूसरी यात्रा के अंतिम भाग, 45:25-28 में, भाई कनान लौट आए। उन्होंने याकूब को बताया कि मिस्र में क्या हुआ था, और याकूब उनके साथ मिस्र लौटने को तैयार हो गया।

पहली यात्रा और दूसरी यात्रा में कुलपिताओं के मेल-मिलाप और पुनर्मिलन की ओर देखने के बाद, हम उत्पत्ति 46:1–47:12 में तीसरी यात्रा पर आते हैं।

तीसरी यात्रा (उत्पत्ति 46:1–47:12)

तीसरी यात्रा दो प्रमुख भागों में विभाजित होती है। सबसे पहले, 46:1-27 अध्याय भाइयों की मिस्र की एक और यात्रा के बारे में बताता है, लेकिन इस बार याकूब के साथ। पद 1-7 में, हम यात्रा के कार्यक्रम और परमेश्वर के आश्वासन के बारे में पढ़ते हैं कि याकूब को मिस्र में आशीषित किया जाएगा। याकूब के पुत्रों और पोतो की सूची के साथ जो मिस्र चले गए थे, 46:8-27 में, यात्रा क्रम फिर समाप्त होता है।

दूसरा, पहली और दूसरी यात्रा के समान, उत्पत्ति 46:28–47:12, मिस्र में घटित घटनाओं के एक भाग को प्रस्तुत करता है। अध्याय 46:28-30 यूसुफ के साथ याकूब के पुनर्मिलन की चर्चा करता है जिसमें यहूदा ने प्रमुख भूमिका निभाई। और इसके बाद, 46:31–47:12 में, फिरौन ने यूसुफ के परिवार का स्वागत किया और उन्हें यूसुफ की देखभाल के अंतर्गत गोशेन में रहने का निर्देश दिया।

कुलपिताओं के मेल-मिलाप और पुन्नमिलन के लेखन के बाद, मूसा फिर अपनी कहानी में, चौथे चरण, या कार्य समापन की ओर मुड़ता है। उत्पत्ति 47:13-27 में, मूसा ने मिस्र पर यूसुफ के उदार शासन के बारे में बताया।

यूसुफ का उदार शासन (उत्पत्ति 47:13-27)

47:13-27 में, हम सीखते हैं कि अकाल समय के साथ भयंकर हो गया। यूसुफ ने पूरे मिस्र और कनान भर में भोजन उपलब्ध कराया। और उसने मिस्र और कनान के लोगों को खिलाने के लिए उनके पशुधन और भूमि को खरीद कर फिरौन की सत्ता को और बढाया। इस प्रक्रिया में, उसने अनगिनत लोगों की जान बचाई।

इस कहानी के अंत में, अर्थात उत्पत्ति 47:27 में, मूसा ने टिप्पणी की कि कैसे यूसुफ के शासन ने याकूब और उसके पुत्रों को लाभ पहुँचाया। मूसा ने लिखा:

> इस्राएली मिस्र के गोशेन प्रदेश में रहने लगे; और वहाँ की भूमि उनके वश में थी; और वे फूले-फले, और अत्यन्त बढ़ गए (उत्पत्ति 47:27)।

कुलपिताओं के प्रारंभिक असामंजस्य, यूसुफ के भयपूर्ण शासन के उदय, भाइयों के मेल-मिलाप और पुनर्मिलन, और मिस्र में यूसुफ के उदार शासन के बाद, हम यूसुफ और उसके भाइयों के बारे में मूसा के लेख के अंतिम चरण पर आते हैं। उत्पत्ति 47:28–50:26 में, यूसुफ के परिवार ने यूसुफ के शासन के तहत कुलपिताओ के बीच सामन्जस्य का अनुभव किया।

कुलपिताओं का सामंजस्य (उत्पत्ति 47:28–50:26)

कुलपिताओं के बीच असामंजस्य की आरंभिक समस्या का इस अंतिम चरण ने समाधान किया गया है। और यूसुफ के परिवार के सामंजस्य पर ध्यान-केंद्रित करने के द्वारा, यह अंतिम चरण इस्राएल के लिए आशीषों को स्थापित करता है जो कि मूसा के पहले श्रोताओं के लिए विशेष रीति से महत्वपूर्ण थे।

कुलपिताओं के सामंजस्य पर लिखा सारा अध्याय दो प्रमुख भागों में विभाजित होता हैं। पहले स्थान पर, उत्पत्ति 47:28–50:14 में, मूसा ने याकूब के अंतिम दिनों में उसके द्वारा स्थापित स्थायी पारिवारिक व्यवस्थाओं पर ध्यान आकर्षित किया है। फिर, उत्पत्ति 50:15-26 में, हम यूसुफ की स्थायी पारिवारिक व्यवस्थाओं को देखते हैं। आइए पहले याकूब के पारिवारिक व्यवस्थाओं की ओर देखते हैं।

याकूब की पारिवारिक व्यवस्थाएं (उत्पत्ति 47:28–50:14)

यह भाग तब शुरू होता है जब याकूब की मृत्यु नज़दीक है। 47:28-31 में, मूसा ने बताया कि याकूब ने यूसुफ़ को शपथ खिलाई की मृत्यु के बाद वह उसे कनान में ही दफनाएगा। फिर, 48:1–49:28 में, हम याकूब की आशीषों से सम्बंधित दो अलग-अलग मुलाकातों के बारे में पढ़ते हैं।

पहली मुलाकात, 48:1-22 में, याकूब ने यूसुफ और उसके बेटों, एप्रैम और मनश्शे को निजी तौर पर आशीर्वाद दिया। यहाँ यूसुफ ने दोहरी विरासत के सम्मान को प्राप्त किया, जो आमतौर पर पहिलौठे को दिया जाता है, क्योंकि याकूब ने एप्रैम और मनश्शे को उनके चाचाओं के बराबर माना। लेकिन

अप्रत्याशित रूप से, याकूब ने एप्रैम को, जो यूसुफ का दूसरा बेटे था, पहिलौठे मनश्शे के ऊपर प्रमुखता दी।

फिर 49:1-28 में, यूसुफ और उसके बेटों को निजी तौर पर प्रमुखता देने के बाद, याकूब के सभी बेटों ने उसके द्वारा अंतिम आशीषों को प्राप्त किया। याकूब ने अपने सभी बेटों को एक साथ इकट्ठा किया, और एक-एक करके कुलपिता ने उन्हें वैसे ही आशीर्वाद दिया जो उनके लिए उपयुक्त था और जैसा जीवन वे जीते आये थे। याकूब के अंतिम आशीर्वाद के रूप में, ये व्यवस्थाएं आने वाली पीढ़ियों के पालन करने हेतु दृढ़ की गयी थी।

यह भाग उत्पत्ति 49:29–50:14 में ख़त्म होता है, जहाँ हम याकूब की मृत्यु और दफनाए जाने के बारे में पढ़ते हैं। इन पदों में, यूसुफ ने अपने पिता की कनान में दफन होने की इच्छा को पूरा किया। फिर वह मिस्र को लौट जाता है।

यूसुफ के शासन के तहत कुलपिताओं के आपसी सामंजस्य में न केवल याकूब के पारिवारिक व्यवस्थाओं पर एक भाग शामिल हैं; परन्तु उत्पत्ति 50:15-26 में यह भाग यूसुफ की पारिवारिक व्यवस्थाओं को भी शामिल करता है।

यूसुफ की पारिवारिक व्यवस्थाएं (उत्पत्ति 50:15-26)

यह संक्षिप्त भाग दो छोटे विवरणों में विभाजित होता है। 50:15-21 में, यूसुफ ने अपने भाइयों को फिर से आश्वस्त किया की वह उनके प्रति दयालुता का व्यवहार रखेगा। यूसुफ के भाइयों ने उससे क्षमा का निवेदन किया, और यूसुफ ने विनम्रतापूर्वक क्षमा कर दिया।

> यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में एक चीज़ जिसे हम देखते हैं वह है क्षमा की शक्ति, परमेश्वर के भले उद्देश्यों पर तब भी भरोसा करने की शक्ति जब परिस्थितियां हमारे लिए बेहद कठिन हैं, और हम उन्हें देखते हैं जो ऐसे कठिन परिस्थिति में नहीं हैं। हम शायद सटीकता से यह कहने में सक्षम हों, कि"उन्होंने मुझे इस परिस्थिति में डाल दिया।" लेकिन अपने भाइयों के प्रति यूसुफ की प्रतिक्रिया जब हम देखते है, विशेषकर इस बात पर जब उन्होंने उसे गुलामी में बेच डाला था, तो हम पाते हैं उसने प्रतिक्रिया के रूप में परमेश्वर के प्रति भरोसा और आज्ञाकारिता का प्रदर्शन किया और एक अद्वितीय एवं महत्वपूर्ण उद्देश्य की पूर्ति की जिसके लिए वह परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था।
>
> — रेव्ह. डा. माइकल वॉकर

उत्पत्ति 50:19-21 में यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा:

> मत डरो। क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था, परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे हैं। इसलिए, अब मत डरो। मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल-बच्चों का पालन-पोषण करता रहूँगा (उत्पत्ति 50:19-21)

यूसुफ और उसके भाइयों की पूरी कहानी उत्पत्ति 50:22-26 में समाप्त होती है जहाँ यूसुफ ने अपने भाइयों को शपथ खिलाई। उत्पत्ति 50:25 को सुनिए:

> यूसुफ ने इस्राएल के पुत्रों को शपथ खिलाई और कहा, "परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तब तुम मेरी हड्डियों को यहाँ से उस देश में ले जाना" (उत्पत्ति 50:25)।

उत्पत्ति की किताब में, यह शपथ यूसुफ की अपनी मृत्यु से पहले अपने भाइयों के साथ अंतिम बातचीत थी। यूसुफ के भाइयों ने अपने वंशजों की ओर से प्रतिज्ञा की कि जब परमेश्वर इस्राएल को मिस्र से निकालेगा, तो वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में दफनाने के लिए यूसुफ की हड्डियों को साथ ले जायेंगे और ऐसा करने के द्वारा वे उसे सम्मान देना जारी रखेंगे।

> यूसुफ के अंतिम वचन ये हैं: "परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा" — मूल रूप से अपने भाइयों और अपने परिवार से बोलते हुए — "और तुम मेरी हड्डियों को यहाँ से उस देश में ले जाना।" मिस्र का शासक होने के नाते, इस बात की बहुत संभावना है कि जब यूसुफ की मौत हुई तो उसे , एक सारकोफेगस में रखा गया था...हर बार जब वे इस संदूक को देखते होंगे, तो वे उस प्रतिज्ञा के बारे में सोचते होंगे जो यूसुफ से की गई थी और उस प्रतिज्ञा के बारे में जो कुलपिताओं को दी गई थी कि तुम उस देश को लौटोगे। यूसुफ ने कहा, "मेरी हड्डियों को अपने साथ ले जाना; उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में अपने साथ दफनाना।" यह उसकी ओर से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को स्वीकार करना था...और इसलिए, जब यहूदियों ने मिस्र छोड़ा, तो मूसा उनके साथ यूसुफ की अस्थियां ले गया। फिर, उन चालीस वर्षों में यह एक प्रतीक बन गया, एक दृश्यमान सहायक, उस महान प्रतिज्ञा का, जिसे इस्राएल के लोगों के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया था कि वे एक दिन प्रतिज्ञा के देश में पहुंचेंगे। इसलिए हड्डियों को अंततः शकेम में दफनाया गया, और मैं सोचता हूँ, कि यहाँ पर प्रस्तुत सिद्धान्त, बहुत सरल है: जीवन में किसी भी चीज़ से ज्यादा वास्तविक परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं होनी चाहिए। परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है।
>
> डॉ. लैरी जे. वॉटर्स

यूसुफ और उसके भाइयों पर हमारे इस पाठ में इस बिंदु तक, हमने मूसा की कहानी की संरचना और सामग्री को देखा है। अब हमें अपने दूसरे मुख्य विषय की ओर बढ़ना चाहिए: इन अध्यायों के प्रमुख विषय।

प्रमुख विषय

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी से निकला अर्थ और उसकी शिक्षाएं, उत्पत्ति के मूल श्रोताओं के लिए इतनी अधिक थी की जिसका सटीकता से उल्लेख कर पाना भी संभव नहीं हैं। और वर्त्तमान प्रासंगिकता के अंतर्गत भी यही सच है। फिर भी, यदि हम मूल श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए इन अध्यायों को देखते हैं, तो कुछ विषय अग्रभूमि में चले जाते हैं। ये प्रमुख विषय उन सभी तरीकों को समाविष्ट नहीं करते हैं जिसे यूसुफ की कहानी के मूल श्रोताओं को प्रभावित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। और न ही वे उन तरीकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें आज के परिवेश में हमें उन्हें लागू करना

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

चाहिए। लेकिन ये प्रमुख विषय हमें उत्पत्ति के इस भाग की कुछ सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं की ओर उन्मुखीकरण प्रदान करते हैं।

इन अध्यायों के कुछ प्रमुख विषयों की ओर हम दो तरीकों से देखेंगे। सबसे पहले, हम इस बारे में कुछ टिप्पणी करेंगे कि कैसे हमें उन सामान्य विशेषताओं को देखना चाहिए जो यूसुफ की कहानी और अब्राहम, इसहाक और याकूब के अभिलेखों में प्रकट होते हैं। और दूसरा, हम उन दो विशिष्ट विशेषताओं पर अधिक ध्यान से देखेंगे जिन पर यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में प्रकाश डाला गया है। आइए सबसे पहले कई सामान्य विशेषताओं को देखते हैं।

सामान्य विशेषताएं

जैसा कि हमने उत्पत्ति के दूसरे पाठों में देखा है, अब्राहम, इसहाक और याकूब के जीवनों से संबंधित कहानियों में चार प्रमुख विषय प्रकट होते हैं। यही विषय यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में भी प्रकट होते हैं: इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर के प्रति इस्राएल के विश्वासयोग्य बने रहने की शर्त, इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें और इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों पर जोर दिया गया है। आइए एक पल के लिए देखें कि बाइबल के इस भाग में इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के विषय पर कैसे विचार करें।

इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह

ईश्वरीय अनुग्रह, दया, और करुणा के लिए पवित्र शास्त्र विशेष शब्दों का प्रयोग करता है, लेकिन यूसुफ की कहानी में हम इन शब्दों को शायद ही देखते हैं। फिर भी, इन अध्यायों में हम परमेश्वर के अनुग्रह के विषय को पाते हैं। यूसुफ के दिन को जिसे हम “प्राचीन संसार” कहेंगे, परमेश्वर ने बीच-बीच में यूसुफ और उसके परिवार को अतीत में प्राप्त अनुग्रह का स्मरण कराया, वह अनुग्रह जिसे उसने उनके समय से पहले उन पर किया था। परमेश्वर ने हर एक मोड़ पर यूसुफ और उसके परिवार पर अपना निरंतर बने रहने वाले अनुग्रह भी प्रकट किया था। और जब परमेश्वर ने भविष्य की घटनाओं को इंगित किया, तो अकसर उसने संकेत दिया कि कैसे यूसुफ और उसका परिवार एक दिन भविष्य में रखे परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करेगा, विशेषकर प्रतिज्ञा किए हुए देश को लौटने का अनुग्रह।

लेकिन इन तीन प्रकार के अनुग्रह ने ही सिर्फ यूसुफ की कहानी को आकार नहीं दिया। मूसा ने यूसुफ के समय में प्रकट हुए परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में लिखा ताकि उसके मूल श्रोता इस बात को समझ सकें कि कैसे परमेश्वर उनके समय में उन्हें भी किस ढंग से अनुग्रह का स्वाद चखाया था।

बहुत कुछ इसी तरह, मसीह के अनुयायी होने के नाते, हम लोग भी यूसुफ और उसके परिवार पर प्रकट किये गए परमेश्वर के अनुग्रह का अनुभव अपने संसार और अपने जीवन में कर सकते हैं। इसे करने के कई तरीके हैं, लेकिन अगर हम मसीह के राज्य के तीन चरणों के प्रकाश में होकर विचार करें तो ज्यादा मदद मिलेगी। हम अपने नए नियम के दृष्टिकोण से देखें तो, अतीत में यूसुफ और उसके भाइयों पर प्रकट हुआ परमेश्वर का अनुग्रह हम पर तब लागू होता है विशेषकर जब मसीह का पहला आगमन होता है, अर्थात उसके राज्य के आरंभ में। हर बार जब हम यूसुफ की कहानी में परमेश्वर के लगातार बने रहने वाले अनुग्रह को देखते हैं, तो यह हमें स्मरण दिलाता है कि कैसे मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान हमारे दैनिक जीवनों में उसका अनुग्रह बना हुआ है। और जैसे यूसुफ और उसके परिवार ने परमेश्वर से भविष्य में भी मिलने वाले अनुग्रह की अपेक्षा की थी, हम लोग नए आकाश एवं नई पृथ्वी में मसीह के राज्य की परिपूर्णता के समय परमेश्वर की दया पर आशा रख सकते हैं।

इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह के साझा होने पर जोर देने के साथ, आइए परमेश्वर के प्रति इस्राएल के विश्वासयोग्य बने रहने की शर्त को देखते हैं।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता

प्राचीन संसार के यूसुफ और उसके भाइयों की मूसा द्वारा लिखी गयी कहानी की सबसे अनूठी विशेषताओं में से एक विशेषता यह है कि मूसा ने कभी भी परमेश्वर से मौखिक निर्देशों या आज्ञाओं का हवाला नहीं दिया। इसके विपरीत, मूसा ने इस्राएलियों से यह अपेक्षा की कि वे प्राचीन संसार में परमेश्वर के प्रति यूसुफ की वफादारी का मूल्यांकन उनके अपने संसार में और जो आज्ञाएँ उन्हें प्राप्त है उसके प्रकाश में करें।

अब, निश्चित रूप से, मूसा जानता था कि सभी कुलपिता परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति वफादार बने रहने के द्वारा अपना उद्धार हासिल नहीं कर सकते। यह हमेशा ही असंभव रहा है। लेकिन उनकी आज्ञाकारिता एवं अनाज्ञाकारिता ने कहानी के प्रत्येक चरण में उनके हृदयों की वास्तविक दशा को प्रगट किया। और मूसा ने अपने श्रोताओं को यह बुलाहट दी की वे यूसुफ की कहानी के प्रकाश में स्वयं अपने हृदयों को जांचे।

उदाहरण के लिए, नकारात्मक पक्ष पर, यूसुफ को मारने की भाइयों की योजना के विषय में परमेश्वर की अस्वीकृति के बारे में मूसा को सीधे तौर पर बोलने की जरूरत नहीं थी। उसके श्रोता पहले ही जानते थे कि इससे निर्गमन 20:13 में हत्या के विषय दी गयी परमेश्वर की छठी आज्ञा का उलंघन होता है। यूसुफ को गुलामी में बेचना व्यवस्थाविवरण 24:7 जैसे नियमों का उल्लंघन करता था। भाइयों ने निर्गमन 20:12 में पिता एवं माता को आदर देने वाली आज्ञा को तोड़ा जब उन्होंने याकूब को धोखा दिया। जब यह सोचकर कि तामार एक वेश्या थी, यहूदा उसके साथ सोया, तो उसने निर्गमन 20:14 और लैव्यवस्था 19:29 में यौन अनैतिकता जैसे अन्य नियमों के तोड़ा और आज्ञाओं का उल्लंघन किया।

लेकिन सकारात्मक पक्ष पर ध्यान दें तो हम पाएंगे कि, मूसा कुछ हद तक परमेश्वर के नियम को पहचानने के लिए अपने श्रोताओं के व्यवस्था के ज्ञान पर भी निर्भर रहा था अर्थात वह यह चाहता था की कब यूसुफ और उसके भाई परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने थे, इस बात को उसके श्रोता स्वयं समझे। उदाहरण के लिए, यूसुफ निर्गमन 20:14 और 17 में सातवीं एवं दसवीं आज्ञाओं के अनुरूप चला जब पोतीपर की पत्नी के बहकावे का विरोध करने के द्वारा उसने यौन नैतिकता का पालन किया था। बाद में, उत्पत्ति 46:29-34 जैसे पदों में, यूसुफ और उसके भाइयों ने निर्गमन 20:12 में पाँचवी आज्ञा के अनुसार अपने पिता का सम्मान किया। यूसुफ के सामने भाइयों के पश्चाताप और उनकी नम्रता ने लैव्यवस्था 5:5 जैसे नियमों को प्रतिबिंबित किया। अपने भाइयों के प्रति यूसुफ की करुणा एवं दया लैव्यवस्था 19:18 जैसे पदों के लिए यथार्थ थी। इस तरह, हम देखते हैं कि, जैसे-जैसे मूसा ने प्राचीन संसार में निष्ठाहीनता और वफादारी का वर्णन किया, तो उसने अपने मूल इस्राएली श्रोताओं को उनके संसार में उनकी निष्ठाहीनता और वफादारी पर ध्यान देने की बुलाहट दी।

आधुनिक मसीही होने के नाते, ऐसे तीन प्रमुख तरीकें हैं जिनसे हमें यूसुफ की कहानी में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता और अविश्वास की चर्चा करनी चाहिए। सबसे पहला, हमें इन उदाहरणों की तुलना परमेश्वर के प्रति यीशु के सिद्ध आज्ञाकारिता के साथ करनी चाहिए, विशेषकर उसके राज्य के आरंभ में। दूसरा, हमें मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान यूसुफ की कहानी के नैतिक सिद्धांतों को अपने दैनिक जीवनों में लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए। और अंततः, यूसुफ की कहानी में विश्वासयोग्यता की अनिवार्य शर्त पर हमें अपना ध्यान यह जान कर केन्द्रित करना चाहिए कि मसीह की वापसी पर उसके राज्य की परिपूर्णता में क्या होगा। उस समय, जो लोग मसीह में उद्धार पाए और विश्वास का पालन करते हैं, वे पूरी तरह से छुटकारा पाएंगे और नए स्वर्ग एवं नई पृथ्वी में परमेश्वर के सिद्ध आज्ञाकारी सेवकों के रूप में बदल दिए जाएंगे।

हमने इस्राएल के लिए परमेश्वर के अनुग्रह की सामान्य विशेषताओं और परमेश्वर के प्रति इस्राएल की योग्यताओं को देख लिया है। तीसरी प्रमुखता जिस पर यूसुफ की कहानी और आरंभिक कुलपिताओं के इतिहास दोनों के द्वारा ज़ोर दिया गया है वह इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषों का विषय है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषें

यूसुफ और उसके भाइयों के "प्राचीन संसार" के संबंध में, हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि परमेश्वर ने कई बार कुलपिताओं की निष्ठाहीनता और योग्यताओं के बावजूद अपनी आशीषों को दिया और कई बार उनकी वफादारी के बदले उन्हें परमेश्वर की आशीषें प्राप्त हुई। मूसा ने प्राचीन संसार में अपने लोगों के लिए परमेश्वर की आशीष के विषय का उल्लेख इसलिए भी किया था ताकि वह अपने मूल श्रोताओं को यह अवगत कराये कि कैसे परमेश्वर ने उन्हें भी उनके संसार में कई ढंग से आशीषित किया है — ऐसा उसने तब भी किया जब वे निष्ठाहीन साबित हुए और तब भी जब उन्होंने अपनी विश्वासयोग्यता का प्रमाण दिया।

बहुत कुछ इसी तरह, यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में परमेश्वर की आशीषें आज हमारे संसार के लिए भी लागू होती है। कितनी बार हम हमारी निष्ठाहीनता के बावजूद और अन्य समयों अपनी वफादारी के जवाब में परमेश्वर की आशीषों को प्राप्त करते है। मसीह के राज्य के आरंभ में अपने लोगों पर उंडेली गई परमेश्वर की आशीषों को स्वीकार करने के द्वारा हम यूसुफ की कहानी और अपने जीवनों के बीच के संबंध को देख सकते हैं। हम यह भी पहचान पाते हैं कि मसीह के राज्य की निरंतरता में वह अभी भी कैसे हमें आशीषित करता है। और हम इस बात पर आशा करते हैं कि मसीह के राज्य की परिपूर्णता के दौरान परमेश्वर हमें कैसे आशीषित करेगा।

इस्राएल के लिए परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की विश्वासयोग्यता की शर्त, और इस्राएल के लिए परमेश्वर की आशीषों की सामान्य विशेषताओं के साथ -साथ यूसुफ की कहानी इस्राएल के माध्यम से दूसरे लोगों के लिए भी परमेश्वर की आशीषों को साझा करने पर बल देती है।

इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषें

उत्पत्ति 12:3, 22:18, और 26:4 जैसे पद हमें बताते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल को आशीषित किया और सभी देशों में उसकी आशीषों एवं उसके राज्य को फैलाने के लिए अब्राहम और उसके वंशजों का अभिषेक किया। यह विषय मुख्यतः उन तरीको में साफ़ प्रकट होता है जिनके द्वारा मिस्र में यूसुफ का शासन अन्य लोगों के लिए आशीषों को लेकर आया था। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 39:5 में यूसुफ पोतीपर के लिए आशीष का कारण बना था। 39:22 में वह फिरौन की जेल में जेलर के लिए आशीष था। और यूसुफ ने फिरौन को भी आशीषित किया जब उसने 41:25 में फिरौन के स्वप्न का अर्थ बताया। लेकिन अन्य लोगों के लिए सबसे बड़ी आशीषें यूसुफ की सत्ता के शिखर के समय पर आती हैं जब वह मिस्री लोगों एवं कई देशों के लिए आशीष का कारण बना। जैसा कि उत्पत्ति 41:56-57 हमें बताता है:

> जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया, तब यूसुफ सब भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा।...इसलिए सारी पृथ्वी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिए यूसुफ के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर भयंकर अकाल था (उत्पत्ति 41:56-57)।

यह देखना आसान है कि इस्राएल के माध्यम से अन्य लोगों को आशीषित किये जाने का विषय मूसा के मूल श्रोता और “उनके संसार” पर कैसे लागु होता था। सबसे पहले, यूसुफ की कहानी को सुनकर, इस्राएली लोग यह जान कर प्रोत्साहित हुए होंगे कि उनके कुलपिताओं ने पहले ही अन्य लोगों को आशीषित किया था। उन्होंने यह भी एहसास किया होगा कि उनके अपने दिनों में अन्य लोगों तक परमेश्वर की आशीषों पहुचाने के लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया था। और उन्होंने भविष्य को दूर से ही देखा होगा जब उनके वंशज परमेश्वर की आशीषों को समस्त पृथ्वी पर फैलायेंगे।

जैसे कि आप अपेक्षा कर सकते है, यह विषय हमारे संसार में हम पर भी लागू होता है। मसीह ने अपने राज्य के आरंभ में संसार को आशीषें प्रदान की थी। राज्य की निरंतरता के दौरान वह अपनी

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

कलीसिया के माध्यम से संसार को आशीषित करता है। और एक दिन, नई सृष्टि में उसके राज्य की परिपूर्णता के समय वह संसार की सभी जातियों और राष्ट्रों को आशीषित करेगा।

विशिष्ट विशेषताएं

जब हमने यूसुफ की कहानी में प्रमुख विषयों का पता लगाया. तो हमने उत्पत्ति में यूसुफ की कहानी और बाकी कुलपिताओं के इतिहास के बीच साझा हुए कुछ विशिष्ट विशेषताओं का भी उल्लेख किया था। अब हमें यूसुफ की कहानी में विशेष रूप से पाए जाने वाले दो मुख्य विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इस पाठ के शुरूआत में हमने प्रस्ताव दिया था कि:

> यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी इस्राएल के गोत्रों को सिखाती थी कि जब वे प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय पाने और उसमें बसने के कगार पर खड़े थे तो ऐसी परिस्थिति में कैसे एक साथ सामंजस्य में रहना है।

जैसा कि हमने देखा, उत्पत्ति के इस भाग का ज्यादातर हिस्सा यूसुफ और उसके भाइयों के बीच असामंजस्य और सामंजस्य के बारे में बताता है। और यूसुफ एवं उसके भाई इस्राएल के बारह गोत्रों के पिता थे। तो, ये संपर्क मूसा के दिनों में इस्राएल के गोत्रों के बीच हुए संपर्कों के साथ सीधे तौर से जुड़े थे। उत्पत्ति 50:24-25 में यूसुफ के अंतिम वचनों को सुनिए जहाँ ये संबंध सामने चले आते हैं:

> यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं तो मरने पर हूँ। परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुँचा देगा, जिसको देने की उसने अब्राहम, इसहाक और याकूब से शपथ खाई थी।" यूसुफ ने इस्राएल के पुत्रों को शपथ खिलाई और कहा, "परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तब तुम मेरी हड्डियों को यहाँ से उस देश में ले जाना" (उत्पत्ति 50:24-25)।

यूसुफ के दिनों के, प्राचीन संसार, और मूसा के मूल श्रोताओं के संसार, के बीच इस अनुछेद ने जो सम्बन्ध बनाया उस पर जरूरत से ज्यादा जोर देना मुश्किल होगा। उत्पत्ति के मूल श्रोताओं के जीवनों में जो घटित हो रहा था— अर्थात प्रतिज्ञा किए हुए देश में उनके प्रवेश के साथ, मूसा ने यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को यूसुफ की इस स्पष्ट प्रत्याशा के साथ समाप्त किया।

यूसुफ के अंतिम वचन और मूल श्रोताओं के अनुभवों के बीच इस संबंध के निहितार्थों को समझने के कई तरीके हैं। लेकिन अपने उद्देश्यों के लिए, हम केवल दो विशिष्ट विशेषताओं को देखेंगे। सबसे पहले, हम देखेंगे कि कैसे मूसा के दिनों में इस्राएल के गोत्रों के बीच राष्ट्रीय एकता का बढ़ावा देने के लिए यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को डिजाइन किया गया था। और दूसरा, हम देखेंगे कि कैसे उसके अंतिम वचन राष्ट्रीय विविधता को स्वीकार करते है जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों के बीच ठहराया था। आइए सबसे पहले राष्ट्रीय एकता के विषय को देखते हैं।

राष्ट्रीय एकता

राष्ट्रीय एकता के विषय के महत्व को देखने के लिए, हमें यह बताने की आवश्यकता है कि यूसुफ और उसके परिवार की कहानी उस पैटर्न से हटती है जो उत्पत्ति में बार बार प्रकट होता है। इस पैटर्न को हम "विशिष्ट उत्तराधिकार" कह सकते है। विशिष्ट उत्तराधिकार से हमारा अर्थ है एक मुख्य व्यक्ति या कुलपिता के माध्यम से समय के साथ परमेश्वर के विशेष अनुग्रह को पारित करना।

इस बारे में कुछ इस तरह से सोचें: उत्पत्ति 1:1–11:9 के अति प्राचीन इतिहास में, परमेश्वर ने सबसे पहले ठहराया कि आदम और उसके वंशज पूरी पृथ्वी को भर देंगे और उस पर राज करेंगे। उन्हें पूरे

संसार में परमेश्वर के महिमामय राज्य को फैलाना था। लेकिन पाप के आने के साथ, ये प्रतिज्ञा विशेष रूप से शेत की तरफ पारित हुई न कि कैन की तरफ। परमेश्वर का विशेष अनुग्रह फिर शेत के वंशजों के माध्यम के पारित हुआ जब तक कि परमेश्वर ने नूह के साथ अपनी वाचा की पुष्टि न की थी। नूह के तीन बेटे थे शेम, हाम और येपेत। लेकिन परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं विशेष रूप से शेम के वंशजों के माध्यम से पारित हुई। और अति-प्राचीन इतिहास के अंत में, शेम का वंशज, अब्राहम, परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का एकमात्र विशेष वारिस बना।

उत्पत्ति 11:10–37:1 में हम देखते है कि कुलपिताओं का आरंभिक इतिहास इस विशिष्ट उत्तराधिकार के दिए जाने के पैटर्न को जारी रखता है। अब्राहम की प्रतिज्ञाएं इश्माएल और अब्राहम के अन्य बेटों के बजाय केवल इसहाक को पारित की गई थी। और परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को एसाव के बजाय विशेष रूप से याकूब को पारित किया गया था।

अब, उत्पत्ति के पहले 36 अध्यायों में विशिष्ट उत्तराधिकार का यह पैटर्न जितना भी महत्वपूर्ण था, यह यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी के साथ अचानक समाप्त हो जाता है। उत्पत्ति के इस भाग में, मूसा ने “संयुक्त उत्तराधिकार” पर जोर दिया। जब याकूब की मृत्यु हुई, उसके सभी बारह बेटे और उनके वंशज, इस्राएल के बारह गोत्र, प्रतिज्ञा किए हुए देश में याकूब की विरासत के संयुक्त रूप से साझेदार थे। और याकूब के सभी पुत्रों के मध्य उसकी विरासत के संयुक्त बंटवारे ने मूसा के श्रोताओं को प्रोत्साहित और प्रेरित किया कि वे अपनी राष्ट्रीय एकता को बनाये रखे।

> जब हम याकूब और फिर यूसुफ और उसके भाई यहूदा की कहानी को पढ़ते हैं, तो हम एहसास करते हैं कि इस परिवार में बहुत उथल-पुथल है, बहुत संघर्ष, ईर्ष्या, लड़ाई है, और परमेश्वर नहीं चाहता है कि उसका वाचाई समुदाय इस तरह का जीवन व्यतीत करें। आगे हम देखते है कि यूसुफ़ और यहूदा एक हो जाते हैं, और अब उनके मध्य कोई संघर्ष नहीं रहा, मैं सोचता हूँ, यह कहानी इसलिए भी एक आदर्श कहानी है, क्योंकि इसके द्वारा परमेश्वर वाचाई समुदाय के मध्य एकता को स्थापित करने का कार्य कर रहा है। भविष्य में आने वाले लोगों के लिए यह एक अच्छा उदाहरण है। यूसुफ और यहूदा इस्राएल में दो प्रमुख गोत्र हैं। यह उस एकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण **बन जाता है जिसे परमेश्वर अपने वाचाई समुदाय में** देखना चाहता है और उत्पन्न करने की कोशिश कर रहा है।
>
> डॉ. रोबर्ट बी.किसहोम, जूनियर.

जैसा कि हमने पहले देखा, यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी एक असामंजस्य के भाव के साथ शुरू होती है जो, भाइयों द्वारा एक दूसरे के खिलाफ किए गए पापमय कार्यों के कारण उत्पन्न हुआ है। लेकिन इसका अंत भाइयों के बीच सामंजस्य उत्पन्न होने के साथ होता है। इस प्रकार, मूसा की कहानी ने उन सब को जो उसके पीछे चल रहे थे स्पष्ट कर दिया कि परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों को राष्ट्रीय एकता में बने रहने के लिए बुलाया था। जैसा कि यूसुफ की कहानी ने चित्रित किया, कि पूरा इस्राएल प्रतिज्ञा किए हुए देश की विरासत में एक साथ साझेदार था जिसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब को दिया था।

फिर, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं, कि मूसा ने अन्य स्थानों पर इस्राएल के गोत्रों के बीच एकता को संबोधित किया। उदाहरण के लिए, निर्गमन 19:8 में उसने जोर दिया कि सभी इस्राएली सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ वाचा में बंधने के लिए एक साथ सहमत हुए। गिनती 32 और यहोशू 1:12-18 में, दोनों मूसा और यहोशू ने जोर दिया कि इससे पहले कि वे एक दूसरे से अलग हों जाएं, गोत्रों को एक साथ

मिलकर कनान देश में लड़ाई लड़नी है। व्यवस्थाविवरण 29:2 में वाचा के नवीनीकरण के लिए भी मूसा ने सभी गोत्रों को एक साथ इकट्ठा किया।

और इससे आगे भी, बाद में आए पुराने नियम के लेखकों द्वारा इस्राएल की राष्ट्रीय एकता पर जोर दिया जाना जारी रहा। दाऊद और सुलेमान की असफलताओं के बावजूद, संयुक्त राजशाही का समय इस्राएल का स्वर्णिम युग माना जाता था। देश का उत्तरी और दक्षिणी राज्य में विभाजन उस आदर्श वंश से बहुत कम था जिसकी अपेक्षा परमेश्वर अपने लोगो से कर रहा था। बाद में, इस्राएल के भविष्यद्वक्ताओं ने प्रतिज्ञा की कि बंधुआई के बाद गोत्र फिर से एक बनाए जाएंगे। और इतिहास जैसी पुस्तकें ज़ोर देती थी कि प्रत्येक गोत्र के प्रतिनिधियों को बंधुआई के बाद प्रतिज्ञा किए हुए देश में बसना चाहिए।

यूसुफ और उसके भाइयों के प्राचीन संसार में सभी बारह गोत्रों के कुलपिताओं के बीच एकता पर मूसा के ज़ोर दिए जाने ने इस्राएल के गोत्रों के बीच उनके समय में राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया। यही एकता पर जोर दिया जाना यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को हमारे आधुनिक संसार में लागू करने के कई मुख्य तरीकों में से एक की ओर इशारा भी करता है। जिस तरह इस्राएल के गोत्रों ने एक विरासत को आपस में साझा किया, मसीह के सभी अनुयायी संसार में हर जगह मसीह की विरासत को साझा करते हैं। यीशु ने इस एकता को अपने राज्य के आरंभ में स्थापित किया। मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान हमें इस एकता को बनाये रखना चाहिए। और हम एक दिन मसीह के राज्य की परिपूर्णता के समय परमेश्वर के लोगों के बीच सिद्ध एकता और सामंजस्य का आनंद उठाएंगे। इफिसियों 4:3-6 को सुनिए, जहाँ पौलुस ने कहा:

> और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा — जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है — एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में और सब में है (इफिसियों 4:3-6)।

इस पद के तर्क पर ध्यान दें। पौलुस मसीह के अनुयायियों से कहता है कि "आत्मा की एकता रखने का यत्न करो।" इस्राएल के गोत्रों के बीच साझा की गयी विरासत के समान, हममें भी बहुत कुछ सम्मिलित रूप से है: एक देह, एक पवित्र आत्मा, एक आशा, एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा और एक परमेश्वर और पिता।

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी आज मसीह के अनुयायियों को कई अवसर प्रदान करती है कि वे उनके बीच अकसर पैदा हो जाने वाले असामंजस्य पर विचार करें। और जब हम दुनिया भर में परमेश्वर के लोगों की एकता के लिए स्वयं को समर्पित करते हैं तो इससे लोगों को एक बड़ा, व्यवहारिक एवं उपयोगी मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

> यूसुफ की कहानी ने इस्राएलियों के बीच राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहित किया क्योंकि यूसुफ ऐसा व्यक्ति था जो क्षमा से भरा हुआ था। और हमारे पास क्षमा ही एकमात्र ऐसा कारक है जिससे, न केवल इस्राएलियों, बल्कि एक मसीही होने के नाते हम, हमारे परिवार, और जो जीवन हम इस संसार में जीते हैं एकजुट हो सकतें है। यूसुफ के साथ उसके भाइयों ने बहुत दुराचार किया था, लेकिन जब वे मुसीबत में थे, तो उसने उन्हें बचाया...और जब हम यूसुफ की कहानी को देखते हैं और यह भी कि कैसे उसने इतनी बड़ी बात को क्षमा किया था। वे उसे मारना चाहते थे। वे उसे जीवित नहीं चाहते थे। वे उससे कभी बाद में भी मिलना नहीं चाहते थे। लेकिन यूसुफ उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहता था। उसके पास सत्ता थी, उसके पास ऐसा करने की शक्ति थी, लेकिन वह धर्मी बना और विश्वास में

> उनसे ज्यादा परिपक्व बना और उन्हें शामिल किया। और यह दोहराया जा सकता है, इस कार्य को इस्राएल के बारह गोत्रों के बीच दोहराया जा सकता था, यह हमारे बीच भी दोहराया जा सकता है, हमारे परिवारों में, हमारी कलीसियाओं में, और हमारे समाज में इसका अनुसरण किया जा सकता है।
>
> — रेव्ह. डा. सीप्रियन के. गुचिएन्डा

अब, यह एहसास करना कितना बहुमूल्य है कि मूसा द्वारा ज़ोर दी गयी विशिष्ट विशेषताओं ने इस्राएल की राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया था, यह एहसास करना भी महत्वपूर्ण है कि मूसा को ऐसा करने की आवश्यकता क्यों पड़ी। संक्षेप में, मूसा ने एकता की जरुरत पर जोर इसलिए दिया क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए राष्ट्रीय विविधता को भी ठहराया था।

राष्ट्रीय विविधता

साधारण शब्दों में कहें तो, सभी गोत्रों के कुलपिता याकूब के वारिस थे, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उन सभी के साथ ठीक एक जैसा व्यवहार किया गया था। इसके विपरीत, पुराने नियम की बाकी की किताबें इस बात को स्पष्ट करती है कि परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों को विभिन्न विशेषाधिकार एवं जिम्मेदारियाँ दी। और मूसा ने एक मुख्य कारण से इस्राएल के गोत्रों के बीच सामंजस्य की आवश्यकता पर जोर दिया: इस्राएल की एकता को केवल तभी कायम रखा जा सकता है, जब इस्राएली लोग यह स्वीकार करें कि स्वयं परमेश्वर ने उनके विविध गोत्रीय विशेषाधिकारों एवं ज़िम्मेदारियों को ठहराया था।

एकता के विषय के समान, विविधता का विषय भी यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी के प्रत्येक चरण में अपना स्थान बनाता आया है। लेकिन यह उत्पत्ति 47:28–49:33 में विशेष रूप से स्पष्ट है। इन अध्यायों में, याकूब ने अपने सभी बारह बेटों में अपनी विरासत बांट दी, लेकिन उसने उनके बीच और उनके वंशजों के बीच स्थायी विविधताओं को भी स्थापित किया।

इन अध्यायों में, याकूब के सभी बेटों के बीच विभेद करके मूसा ने इस्राएल की राष्ट्रीय विविधता को बढ़ावा दिया। हालांकि, अपने उद्देश्यों के लिए, हम केवल दो को ही देखेंगे: यहूदा एवं उसके वंशज और, बेशक, यूसुफ एवं उसके वंशज। आइए पहले यहूदा और उसके वंशजों को दिए गए सम्मान की चर्चा करते हैं।

यहूदा और उसके वंशज। इन अध्यायों में मूसा ने कुलपिता यहूदा को कई बार मुख्य भूमिका में प्रस्तुत किया ताकि यहूदा और उसके गोत्र के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराई विशिष्टता की पुष्टि की जा सके। यहूदा सबसे पहले उत्पत्ति 37:12-36 में प्रकट होता है जहाँ भाइयों ने यूसुफ को मारने की कोशिश की। 26-27 पदों में यहूदा अपने भाइयों के बीच में खड़ा हुआ और यूसुफ की ओर से सफलतापूर्वक हस्तक्षेप किया। यहूदा ने पद 27 में भाइयों को यह याद दिलाने के द्वारा कि "[यूसुफ] हमारा भाई, हमारा अपना मांस और लहू है" उस सामंजस्य की पुष्टि की जो भाइयों की विशेषता होनी चाहिए थी। और हम यहाँ देखते हैं कि यहूदा के नेतृत्व को स्वीकार किया गया जब उसके भाई उसकी योजना से सहमत हुए।

अध्याय 38:1-30 में यहूदा पुनः प्रकट होता है जब मूसा ने कनान में यहूदा के पाप की कहानी को याद करते हुए फिर से दोहराया। पोतीपर के घर में यूसुफ द्वारा प्रदर्शित की गयी सत्यनिष्ठा और खराई का वृत्तांत यहूदा द्वारा किये गए अनैतिकता के विपरीत है। लेकिन, 38:26 में, मूसा ने यहूदा के विनम्रता और अपने अपराध को स्वीकार किये जाने को उजागर किया जब यहूदा ने यह माना कि, "[तामार] मुझ से ज्यादा धर्मी है।" यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने यहूदा के पश्चाताप को स्वीकार किया क्योंकि परमेश्वर ने फिर यहूदा को जुड़वां बेटों, पेरेस और जेरह के साथ आशीषित किया।

44:14-34 में मूसा ने कुलपिताओं की मिस्र की दूसरी यात्रा के दौरान यहूदा के नेतृत्व की ओर ध्यान आकर्षित किया। जब बिन्यामिन पर चांदी का कटोरा चोरी करने का आरोप लगा, तो यूसुफ की उपस्थिति में यहूदा आगे आया और दया के लिए बिनती की। उसने विनम्रता के साथ स्वयं को और अपने भाइयों को यूसुफ के "सेवक" बताकर बात की। उसने और उसके भाइयों ने जो किया था उसे उन्होंने स्वीकार किया तथा यह कहने के द्वारा कि "परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म पकड़ लिया है" अपने सच्चे पश्चाताप को व्यक्त किया। इस बात का ध्यान रखने के द्वारा कि यदि बिन्यामिन कनान नहीं लौटा "तो [उसका] पिता मर जाएगा।" उसन अपने पिता का सम्मान किया तथा हिम्मत करके "लड़के के स्थान पर" स्वयं मिस्र में रहने की पेशकश की।

और अंत में, 49:1-28 में, याकूब के अंतिम आशीर्वाद के दौरान यहूदा मुख्य आकर्षण का केंद्र बनता है। 8-12 पदों में, याकूब ने घोषणा की कि यहूदा और उसका गोत्र को नेतृत्व के एक अद्वितीय पद दिया जायेगा और उनको ऊँचा किया जाएगा। और यहूदा का गोत्र एक दिन राजाओं का गोत्र बनेगा जहाँ से राजशाही का आरम्भ होगा। उत्पत्ति 49:8-10 में याकूब के वचनों को सुनिए:

> हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे; तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा; तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे।...जब तक शीलो न आए तब तक न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देने वाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएँगे (उत्पत्ति 49:8-10)।

यहाँ पर ध्यान दें कि यहूदा के "भाई [उसका] धन्यवाद करेंगे।" उसका हाथ "[उसके] शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा," का अर्थ है कि वह हर उस व्यक्ति पर विजय प्राप्त करेगा जो उसका विरोध करेगा। और यहूदा के "पिता के पुत्र" — उसके भाई — "[उसे] दण्डवत् करेंगे।" उसके पहले के चरित्रों के लिए सच, मूसा ने संकेत दिया कि यहूदा का गोत्र इस्राएल के दूसरे गोत्रों पर अधिकार रखेगा।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि "राजदण्ड" और "व्यवस्था देने वाला," राजशाही के चिन्ह, यहूदा का एक वंशज रखेगा। यहूदा का शाही परिवार तब तक शासन करना जारी रखेगा "जब तक शीलो न आए और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे।"

पवित्र शास्त्र में उत्पत्ति 49:10 हमें पहला स्पष्ट हवाला देता है कि यहूदा का एक वंशज पूरे संसार के ऊपर राजा बनेगा। दाऊद के घराने के मसीहा के लिए यह एक स्पष्ट हवाला है। और भविष्य का यह राजा उत्पत्ति 12:3 की प्रतिज्ञा को पूरा करेगा जहाँ परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, "भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।" इस राजा के द्वारा, परमेश्वर का राज्य पूरे भूमण्डल पर पहुँचेगा। और "राज्य राज्य के लोगों की अधीनता" यहूदा से निकले इस महान राजा को दी जाएगी।

यह समझना मुश्किल नहीं है कि क्यों मूसा ने अपने मूल श्रोताओं के संसार के लिए प्राचीन संसार में यहूदा के महिमामय किये जाने पर जोर दिया। यहूदा याकूब का पहला बेटा नहीं था, और सामान्यतः ऐसी प्रमुखता उसकी नहीं होना चाहिए थी। इसलिए, जब मूसा ने राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए यूसुफ और उसके भाइयों के बारे में लिखा, तो उसने उनसे इस तथ्य के प्रकाश में इस एकता को बनाए रखने की अपेक्षा की कि परमेश्वर ने भी यहूदा के गोत्र को इस तरीके से महिमामय किया था।

हमारे संसार में मसीह के आधुनिक अनुयायियों के लिए यहूदा के महिमामय किए जाने के कई निहितार्थ हैं। लेकिन इन सब में प्रमुख तथ्य यह है कि परमेश्वर ने यहूदा के गोत्र से एक सर्वोच्च राजा की प्रतिज्ञा की। और यह प्रतिज्ञा ब्रह्मांड के राजा, यीशु में पूरी होती है जो दाऊद का सिद्ध धर्मी पुत्र है। अपने राज्य के आरंभ के समय यीशु स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठा। वह अपने राज्य की निरंतरता के दौरान शासन करता है जब तक कि अपने शत्रुओं को वह अपने पैरों तले नहीं करता। और उसके राज्य की परिपूर्णता के समय, वह नई सृष्टि पर सदा के लिए राज करेगा।

यह देखने के बाद कि मूसा ने यहूदा और उसके वंशजों पर ध्यान आकर्षित करने के द्वारा इस्राएल के भीतर राष्ट्रीय विविधता पर कैसे जोर दिया, आइए उत्पत्ति के इस भाग में यूसुफ और उसके वंशजों की स्पष्ट विशिष्टता की ओर बढ़ते हैं।

यूसुफ और उसके वंशज। जैसा कि हमने देखा, उत्पत्ति 37:2–50:26 का प्रमुख पात्र यूसुफ है। लेकिन, उसके भाइयों के विपरीत, इन अध्यायों में यूसुफ को बहुत ही आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत गया है। वास्तव में, केवल एक ही बार ऐसा हुआ है जब मूसा ने यूसुफ के चरित्र में दोष होने का संकेत दिया था जो कि शुरूआती अध्यायों में देखने को मिलता था। 37:2-11 में हम पढ़ते हैं कि यूसुफ ने अपने भाइयों को गुस्सा दिलाया। उसने अपने पिता को उनके बारे में बुरी रिपोर्ट दी और भविष्य में घटने वाले अपने सपनों के बारे में उनके सामने डींग मारी। लेकिन यह नकारात्मक विशेषता भी सूक्ष्म है। और पद 2 में मूसा ने यूसुफ को "केवल सत्रह वर्ष" का बता कर इसे और सूक्ष्म कर दिया।

दोष के इस संकेत के अलावा, यूसुफ का चित्र पूरी तरह से सकारात्मक है। यूसुफ ने वफादारी से पोतीपर की सेवा की। उसने पोतीपर की पत्नी का विरोध किया। फिरौन के प्रति अपने सेवा में वह दोष रहित था। जब उसके भाई उसके पास आए तो उसने बुद्धिमानी से उनकी परीक्षा ली। भाइयों द्वारा उसके खिलाफ की गई बुराई के बाद भी वह उनके प्रति कोमल हृदय बना रहा। उसने अपने पिता और बिन्यामिन के लिए प्रेम का प्रदर्शन किया। मिस्र का अगुवा होने के नाते उसने कई देशों को आशीषित किया। इन और कई अन्य तरीकों के द्वारा, मूसा ने यूसुफ को ठीक वैसे ही चित्रित किया जैसे उत्पत्ति 49:26 में याकूब ने उसका वर्णन करते हुए कहा था कि यूसुफ “अपने भाइयों के मध्य राजकुमार के समान था।”

अब वास्तविक रूप से, हम सब सामान्य अनुभव से जानते हैं कि अपने जीवन काल में यूसुफ ने कई बार पाप किया होगा। यीशु को छोड़कर, यह हर युग में हर व्यक्ति के लिए सत्य रहा है। तो, मूसा ने यूसुफ को इस प्रकार से आदर्श व्यक्ति के रूप में क्यों प्रस्तुत किया? उसका उद्देश्य क्या था? उत्तर इस तथ्य में है कि परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों के बीच में यूसुफ और उसके वंशजों को विशेष प्रमुखता दी थी।

यूसुफ और उसके वंशजों की विशिष्टता सबसे पहले उत्पत्ति 48:1-22 में यूसुफ के बेटों के लिए बनाई गई विशेष व्यवस्था में प्रकट होती है। इन पदों में, याकूब ने यूसुफ के बेटों, एप्रैम और मनश्शे को ऐसे आशीषित किया जैसे कि वे स्वयं उसी के बेटे हों। 1 इतिहास 5:1 के अनुसार, रूबेन में पहिलौठेपण के अपने पद को गंवा दिया था क्योंकि उसने अनाचार किया था। इसलिए, जब याकूब ने एप्रैम और मनश्शे को अपने बेटों के समान गोद लिया, तो इसका अर्थ था कि यूसुफ ने याकूब के पहिलौठे के समान दोहरे हिस्से को प्राप्त किया।

इस व्यवस्था के सबसे आकर्षक भागों में से एक 48:13-20 में दिखाई देता है जहाँ याकूब ने मनश्शे से पहले एप्रैम को आशीर्वाद दिया। यूसुफ ध्यानपूर्वक अपने बेटों को याकूब के सामने पेश करता है ताकि याकूब का दाहिना हाथ, उत्तम आशीष का हाथ, मनश्शे के सिर पर पड़ेगा। फिर याकूब का बांया हाथ, कम आशीषों वाला हाथ, एप्रैम के सिर पर पड़ेगा। यह व्यवस्था उचित जान पड़ती है क्योंकि मनश्शे यूसुफ का पहिलौठा पुत्र था। लेकिन स्पष्टीकरण के बिना, याकूब ने अपने हाथों को फैलाते समय उलट दिया ताकि उसका बांया हाथ मनश्शे के ऊपर गया और उसका दायां हाथ एप्रैम के ऊपर गया। यूसुफ इससे नाखुश हुआ और याकूब के हाथ को मनश्शे की ओर करने की कोशिश करने लगा। लेकिन फिर उत्पत्ति 48:19 में जो होता है उसे सुनिए:

> उसके पिता ने मना कर दिया और कहा, “मैं इस बात को भली भांति जानता हूँ। [मनश्शे] से भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान हो जाएगा। तौभी, इसका छोटा भाई इससे अधिक महान हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियां निकलेंगी” (उत्पत्ति 48:19)।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org

या जैसा कि इसे कहा जा सकता है, "अपने आप में पूरा देश।" गिनती 2:18-21 और व्यवस्थाविवरण जैसे अनुच्छेद संकेत देते हैं एप्रैम वास्तव में मनश्शे से ज्यादा असंख्य और प्रमुख बन गया था। वास्तव में, एप्रैम का प्रभुत्व इतना बड़ा था कि बाद में, विभाजित राजशाही के दौरान, उत्तरी इस्राएल के पूरे देश को अकसर "एप्रैम" कहा जाता था।

अब, मसीह के आधुनिक अनुयायियों के लिए यह सब असंगत जान पड़ सकता है। लेकिन यूसुफ और उसके भाइयों के प्राचीन संसार में एप्रैम को दी गई अप्रत्याशित प्रमुखता परमेश्वर द्वारा ठहराई गई व्यवस्था की ओर इशारा करती है जो कि मूसा के मूल श्रोताओं के उनके संसार के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण थी। जब मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक को लिखा, तो वह देश के नेतृत्व को अपने शिष्य, यहोशू के हाथ में सौंपने वाला था। लेकिन मूसा और हारून के समान यहोशू लेवी के गोत्र से नहीं था। वह यहूदा के शाही गोत्र से नहीं था। नहीं, यहोशू एप्रैम के गोत्र में से था, उस गोत्र से जिसे परमेश्वर ने बाकी दूसरों के ऊपर प्रमुखता के साथ आशीषित किया था। फलस्वरूप, मूसा ने उत्तराधिकारी की अपनी पसंद को मान्य करने के लिए इस विवरण में एप्रैम पर प्रकाश डाला। यहोशू की मृत्यु के बाद ही यहूदा का गोत्र विशिष्टता में ऊपर उठा। यहोशू, एक एप्रैमवासी, प्रतिज्ञा किए हुए देश में राष्ट्र की अगुवाई करेगा।

मसीह के आधुनिक अनुयायी होने के नाते, यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी का यह आयाम उन विविध आशीषों और भूमिकाओं को स्वीकार करने के लिए हम से कहता है जिन्हें परमेश्वर ने हमारे संसार में ठहराए हैं। अपने राज्य के आरंभ में, यीशु ने अपने लोगों को विविध उपहारों से आशीषित किया। उसने कुछ को प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक और इन्हीं के समान दिया। उसने विभिन्न लोगों को विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों और विशेषाधिकारों के लिए बुलाया। मसीह ने इस विविधता को अपने लोगों को खंडित करने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें एक-दूसरे से बांधने के लिए स्थापित किया। और मसीह के राज्य की निरंतरता के दौरान, पवित्र आत्मा अपनी इच्छा के अनुसार उपहारों को उंडेलता है। और परिपूर्णता में भी, हम उन तरीकों में विविधता देखेंगे जिनमें परमेश्वर मसीह का अनुसरण करने वालों को सम्मानित करेगा। जब हम यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को अपने संसार पर लागू करते हैं, तो हमें विविधता को स्वीकार करना एवं उस मूल्य को महत्व देना चाहिए जिसे परमेश्वर ने हर युग में अपने लोगों के बीच ठहराया है।

उपसंहार

यूसुफ और उसके भाइयों पर प्रस्तुत पाठ के इस बिंदु तक, हमने मूसा की कहानी की संरचना और सामग्री को देखा है। और हमने ये भी देखा कि प्रमुख विषयों को बढ़ावा देने के लिए मूसा ने इन अध्यायों का कैसे प्रयोग किया, जिसमें वो विषय भी है जो उत्पत्ति के पहले भागों में दिखाई देते हैं, और इस्राएल देश की एकता और विविधता पर इन अध्यायों में मूसा की विशेष प्रमुखता शामिल है।

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी उजागर करती है कि इस्राएल के कुलपिताओं के लिए एक साथ मेल से रहना कितना कठिन था। लेकिन अंत में, परमेश्वर ने उनके बीच प्रेम के स्थायी बंधन को स्थापित किया। उन दिनों के इस्राएली लोगों को असामंजस्य, मेल-मिलाप, और सामंजस्य की इस कहानी को इसलिए बताया गया ताकि सभी बारह गोत्रों को परमेश्वर के लोग होने के नाते पश्चाताप और एकता की बुलाहट दी जा सके और यह कहानी आज हमें भी आपसी मतभेद और फूट का विरोध करने और मसीह के अनुयायियों के रूप में अपने मध्य के आपसी प्रेम के बंधन को बढ़ावा देने के लिए बुलाता है। मसीह की देह होने के नाते, हमें मसीह की विरासत में साझेदारी करनी है। और यूसुफ और उसके भाइयों

की कहानी इस बात के लिए हमें बहुत ही आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करती है कि कैसे हमें दुनिया भर में परमेश्वर के महिमामय राज्य की खातिर और उसके लोगों की एकता के लिए स्वयं को समर्पित करना है।

वीडियो, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें – thirdmill.org